लोकनायक जयप्रकाश नारायण का शिक्षा दर्शन

पंकज कुमार दूबे*

लोकनायक जयप्रकाश नारायण भारतवर्ष के महान समाजवादी चिन्तकों में से एक हैं। इनकी भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण सक्रिय भूमिका रही एवं स्वतंत्रता उपरान्त इन्होंने सन् 1954 में राजनीति का त्याग कर अपना संपूर्ण जीवन सामाजिक पुनर्निर्माण हेतु समर्पित कर दिया। इनके विचारों का प्रभाव शिक्षा पर भी पड़ा। इनका शिक्षा-चिन्तन समाज की आवश्यकताओं एवं हितों पर आधारित है जो आज के समय की माँग भी है। इन्होंने शिक्षा के लगभग सभी पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत किये तथा शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन पर विशेष बल दिया। उनके अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो सामाजिक आवश्यकताओं के अनुकूल हो तथा जीवनोपयोगी हो, साथ ही लोगों को आत्मनिर्भर बनाये।

शिक्षा एवं समाज के मध्य अन्योन्याश्रित संबंध होता है। जैसी शिक्षा होती है वैसा ही समाज का निर्माण होता है तथा जैसा समाज होता है वैसी शिक्षा होती है। समाज के लिए शिक्षा एक साधन है जिसके द्वारा समाज हेतु अच्छे मानव का निर्माण होता है जो उस समाज के विकास में सहायक होते हैं। समाज की जो आवश्यकताएँ होती हैं यदि शिक्षा उनकी पूर्ति में सहायक होती है तो उस शिक्षा की प्रासंगिकता बनी रहती है अन्यथा ऐसी शिक्षा का कोई अर्थ नहीं रह जाता जो समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक नहीं होती। इसलिए यदि शिक्षा को और ज़्यादा प्रासंगिक बनाना है, समाज की आवश्यकताओं के अनुकूल शिक्षा में परिवर्तन करना है तो सामाजिक चिंतकों के विचारों पर भी ध्यान देना होगा, उनके विचारों के अनुरूप शिक्षा में परिवर्तन करना होगा।

भारतीय समाज में काफी असमानताएँ विद्यमान हैं चाहे वह शैक्षिक हों, सामाजिक हों या फिर आर्थिक, जिनका समाधान समाजवाद में मिलता है। इसीलिए हमारे देश के सामाजिक चिंतकों ने समाजवाद को भारतीय समाज की प्रमुख आवश्यकता स्वीकार किया तथा भारत के संविधान की उद्देशिका में भारत को समाजवादी राष्ट्र के रूप में विकसित करने का लक्ष्य रखा गया। परंतु यह राष्ट्र इस लक्ष्य से कहीं दूर भटक चुका है जिसकी मुख्य वजह है भारतीय जनमानस में समाजवादी चिंतन का विकसित न होना। जनमानस में तो पूंजीवाद है जिस हेतु

**शोध छात्र*, शिक्षा संकाय, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तर प्रदेश

सर्वत्र भ्रष्टाचार एवं हिंसा पनप रही है। इसलिए आवश्यक है भारतीय जनमानस में समाजवादी चिन्तन का विकास जो मात्र शिक्षा द्वारा सम्पन्न हो सकता है। ऐसी परिस्थिति में समाजवादी चिन्तकों के शैक्षिक विचार ज़्यादा महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं जिनके अनुरूप शिक्षा में सुधार किया जाए और शिक्षा को आज की परिस्थिति के अनुरूप ज़्यादा प्रासंगिक बनाया जाए।

भारत में जो प्रमुख समाजवादी चिंतक हुए उनमें जयप्रकाश नारायण का नाम प्रमुख रूप से आता है जिन्हें लोग लोकनायक भी कहते हैं तथा जिन्होंने सामाजिक पुनर्निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं भारतीय शिक्षा को भी प्रभावित किया। जयप्रकाश नारायण का चिंतन किसी एक विचार से नहीं बंधा रहा बल्कि साम्यवाद, तदोपरान्त सर्वोदय से होता हुआ संपूर्ण क्रान्ति के रूप में प्रस्फुटित हुआ। इन्होंने सोशलिस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट, ग्राम पाठशाला, लेबर कॉलेज की स्थापना के विचार रखे तथा गांधी अध्ययन संस्थान की स्थापना की। इन्होंने बिहार के छात्र आन्दोलन का नेतृत्व कर शैक्षिक क्रान्ति एवं संपूर्ण क्रान्ति का बिगुल फूँका। इनके शैक्षिक विचारों का प्रभाव आचार्य राममूर्ति कमीशन के सुझावों पर भी पड़ा। ऐसे में बहुत आवश्यक हो जाता है कि उनके शिक्षा दर्शन के आधार पर शिक्षा में सुधार किया जाए जो भारतीय शिक्षा को एक नई दिशा दे सके।

शिक्षा

जयप्रकाश नारायण ने शिक्षा पर गहन चिंतन किया एवं अपने अनुभवों के आधार पर उसे समझने का प्रयास किया। उन्होंने शिक्षा को व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया। उनका यह मत था कि शिक्षा समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण करने एवं एक प्राणी को एक अच्छे मनुष्य के रूप में विकसित करने का साधन है।

जयप्रकाश नारायण के अनुसार शिक्षा, चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व विकास हेतु एक प्रमुख उपकरण है तथा मनुष्य की क्षमताओं में वृद्धि करने का साधन है, जिससे मनुष्य स्वयं को एक अच्छा मनुष्य बना सके।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वास्तविकता यही है कि शिक्षा को मनुष्य की क्षमता में वृद्धि करने के साधन के रूप में ही देखा जा रहा है एवं चरित्र निर्माण तथा व्यक्तित्व विकास हेतु एक उपकरण के रूप में इसकी आवश्यकता बनी हुई है। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण की शिक्षा संबंधी अवधारणा वास्तविकता के काफी करीब तथा व्यावहारिक है। उन्होंने शिक्षा को किसी काल्पनिक तथ्य से दूर रखते हुए मनुष्य के वास्तविक जीवन में विकास से संबंधित किया जो वर्तमान में बहुत ज़्यादा प्रासंगिक है और यही वर्तमान में समाज की आवश्यकता भी है।

शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा का उद्देश्य क्या हो? यही वह बिंदु है जो शिक्षा की रूपरेखा तय करता है तथा किस प्रकार शिक्षा प्रदान की जाए इसका निर्णय भी करता है। जयप्रकाश नारायण ने शिक्षा के उद्देश्य को समाज के उद्देश्यों और उसकी आवश्यकताओं से जोड़ा। उनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं से जुड़ा हुआ होता है, उसे पूर्व निश्चित नहीं किया जा सकता। उनके अनुसार

शिक्षा सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति एवं सामाजिक हित हेतु होती है। इसलिए जैसे-जैसे समय, स्थान, परिस्थिति के साथ समाज की आवश्यकताओं में परिवर्तन होता है वैसे-वैसे शिक्षा के उद्देश्यों में भी परिवर्तन होता रहता है। इसलिए उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य को पूर्व निश्चित न करते हुए सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तनशील माना एवं सामाजिक उद्देश्यों के संदर्भ में शिक्षा के उद्देश्य को रेखांकित किया। वर्तमान भारतीय समाज के संदर्भ में उन्होंने समाजवादी चिन्तन के विकास को शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य के रूप में स्वीकार्य किया क्योंकि उनके अनुसार समाजवाद भारतीय समाज की प्रमुख आवश्यकता है।

यथार्थ में शिक्षा को समाज ने अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के संदर्भ में ही देखा है। वर्तमान में समाज अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा की रूपरेखा और उद्देश्य तय करता है। शिक्षा के ऐसे उद्देश्य निर्धारित करता है जो समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण करें। जो समाज की आवश्यकताओं को पूर्ण करने से संबंधित नहीं होता उसकी कोई प्रासंगिकता ही नहीं होती। जयप्रकाश नारायण ने शिक्षा के उद्देश्य की समाज की आवश्यकता एवं समाज हित के अनुरूप जो व्याख्या की, वही वास्तविकता भी है और प्रासंगिकता भी। क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तित एवं निर्धारित होता रहता है और ऐसे ही उद्देश्यों को पूर्ण भी किया जा सकता है। जो उद्देश्य समाज की आवश्यकता के अनुरूप नहीं होते न तो वे पूर्ण हो पाते हैं और न ही उनका कोई विशेष महत्त्व ही होता है। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण का शिक्षा के उद्देश्य के संदर्भ में जो चिंतन रहा वह वर्तमान में बहुत ज़्यादा प्रासंगिक है। वर्तमान भारतीय समाज में विद्यमान असमानता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने समाजवाद की आवश्यकता को रेखांकित किया जिसके लिए उन्होंने समाजवादी चिंतन के विकास को भारतीय समाज हेतु शिक्षा के उद्देश्य के रूप में उल्लिखित किया वह अद्वितीय है और प्रासंगिक तथा महत्त्वपूर्ण भी है जिसकी आज नितांत आवश्यकता है।

पाठ्यचर्या

जयप्रकाश नारायण ने शिक्षा की पाठ्यचर्या को भी समाज की आवश्यकता के अनुरूप निर्मित करने पर बल दिया। उनके अनुसार जब विभिन्न समाज की आवश्यकताएँ अलग-अलग होंगी तो उनके लिए पाठ्यचर्या भी एकसमान न होकर उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप अलग-अलग होंगी। उन्होंने भारतीय समाज के संदर्भ में, जहाँ ग्रामीण समाज ही प्रमुखता से है तथा कृषि प्रधान है, के लिए भी वर्तमान शहरी शिक्षा से भिन्न पाठ्यचर्या की परिकल्पना प्रस्तुत की इसीलिए उन्होंने पाठ्यचर्या को ग्रामीण उन्मुख एवं अनुभव आधारित बनाने पर बल दिया। उनके अनुसार शहरी शिक्षा के समान ग्रामीण शिक्षा नहीं होनी चाहिए बल्कि ग्रामीण शिक्षा की रूपरेखा शहरी शिक्षा से भिन्न होनी चाहिए जो ग्रामीण परिस्थितियों में वहाँ के लोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक हो।

उन्होंने ग्रामीण शिक्षा हेतु पाठ्यचर्या की एक रूपरेखा प्रस्तुत की जो निम्नलिखित है-

ग्रामीण विद्यालय की शैक्षणिक रूपरेखा – कृषि, ग्रामीण उद्योग, अर्थशास्त्र (सहयोग एवं सहयोगी संस्थाएँ – कानून, नियम संविधान), समाजशास्त्र

(जो क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए सार्थक हो), विज्ञान, भाषा और साहित्य, ग्राम सभा (निर्णय करने की पद्धति तथा उसकी क्रियान्विति), ग्राम अदालत, लेखा तथा बही खाते (कृषि, व्यापार तथा ग्रामीण उद्योग), स्वास्थ्य और सफाई (शौचालय, जलापूर्ति), जीवाणु एवं जीव विज्ञान (ग्रामीण ढाँचे से संबंधित), बागवानी, जन्तु विज्ञान, खाद्य एवं पौष्टिकता (उपलब्ध स्रोत), गैस प्लांट, कम्पोस्ट, आदि शिक्षण के विषय होने चाहिए।

जयप्रकाश नारायण ने पाठ्यचर्या में मात्र भौतिक शिक्षा को ही सम्मिलित नहीं किया बल्कि आध्यात्मिक शिक्षा को भी सम्मिलित किया क्योंकि उनके अनुसार बिना आध्यात्मिक शिक्षा के भौतिक शिक्षा समाज हेतु खतरनाक हो सकती है। उनके अनुसार सभी में एक समान दृष्टि का भाव, परोपकारिता, अहिंसा इत्यादि मूल्य विकसित करने हेतु आध्यात्मिक शिक्षा अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि ये मूल्य बिना अध्यात्म के टिक ही नहीं सकते। इसलिए उन्होंने शिक्षा में आध्यात्मिक शिक्षा तथा भौतिक शिक्षा के समन्वय बनाये रखने पर बल दिया क्योंकि उनकी दृष्टि में भौतिक शिक्षा भी आवश्यक है तथा आध्यात्मिक शिक्षा भी। इसके अतिरिक्त उन्होंने अनुभव आधारित पाठ्यचर्या में संरचनात्मक कार्य, सामुदायिक कार्य तथा गांधी दर्शन को रखने पर विशेष बल दिया। जयप्रकाश नारायण ऐसी पाठ्यचर्या चाहते थे जो प्रत्येक व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाये। वह ऐसी पाठ्यचर्या के पक्ष में बिलकुल नहीं थे जो छात्र को नौकरी के लिए भटकने पर विवश करे। इसलिए उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के लिए इंटरमीडिएट टैक्नोलॉजी के प्रशिक्षण का विचार प्रस्तुत किया जो उन्हें आत्मनिर्भर बनाये एवं उनमें श्रम के प्रति श्रद्धा भी उत्पन्न करे।

जयप्रकाश नारायण की ग्रामीण उन्मुख पाठ्यचर्या अद्वितीय है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में जहाँ ज़्यादातर जनसंख्या ग्रामीण समाज की है परंतु ग्रामीण समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में न रखते हुए शिक्षा की व्यवस्था की गयी है जिसका प्रभाव है कि लोगों का नौकरी एवं कार्य की तलाश में शहरों की तरफ पलायन जारी है तथा गाँव विकास के सपने से मीलों दूर है। इन परिस्थितियों में जयप्रकाश नारायण द्वारा प्रस्तुत ग्रामीण स्कूल की पाठ्यचर्या एक नयी पाठ्यचर्या के विकास हेतु एक आधार का कार्य कर सकती है। जयप्रकाश नारायण ने पाठ्यचर्या को स्कूल की कक्षाओं के अनुसार विभक्त करने का विरोध किया और वर्तमान पाठ्यचर्या में समाज की आवश्यकताओं के आधार पर सुधार करने पर बल दिया। वर्तमान परिस्थिति में जब लोग विभिन्न ऊँची-ऊँची डिग्रियाँ लेकर नौकरी के लिए भटक रहे हैं न स्वयं को आत्मनिर्भर बना पाये और न ही समाज के विकास में सहायक हो पा रहे हैं बल्कि बेरोज़गारी के शिकार तथा देश में अशांति का कारण बने हुए हैं, जयप्रकाश नारायण द्वारा प्रस्तुत पाठ्यचर्या बहुत ही प्रासंगिक सिद्ध हो सकती है।

इस देश में पंथनिरपेक्षता के नाम पर आध्यात्मिक शिक्षा को पाठ्यचर्या में शामिल नहीं किया जाता बल्कि लोगों को अपने धर्म में कट्टर बनने तथा दूसरे धर्मों के संदर्भ में भ्रम की स्थिति पैदा करने को बढ़ावा दिया जाता है। इस संदर्भ में जयप्रकाश नारायण जैसे समाजवादी चिंतक द्वारा आध्यात्मिक शिक्षा की अनिवार्यता पर बल देना नयी पाठ्यचर्या के विकास का आधार हो सकता है। यह सत्य है कि ज़्यादातर मूल्य अहिंसा, परोपकारिता तथा स्वयं तथा दूसरों में समान

भाव इत्यादि का आधार अध्यात्म ही है। यह मूल्य लोगों में आध्यात्मिक चिंतन के द्वारा ही विकसित किये जा सकते हैं। ऐसा नहीं है कि जयप्रकाश नारायण ने किसी विशेष सम्प्रदाय की शिक्षा देने को कहा बल्कि उनकी आध्यात्मिक शिक्षा बहुत व्यापक तथा सभी में एक ही परमशक्ति के अंश के होने पर बल देती है जो लोगों में अहिंसा, समान भाव तथा परोपकारिता के विकास में सहायक है। वर्तमान में भारतीय शिक्षा की सबसे बड़ी खामी यह है कि यह लोगों को पूर्णतः आत्मनिर्भर बनाने में अक्षम है। बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ लेकर नौकरी की तलाश में लोग भटक रहे हैं परंतु नौकरियाँ सीमित संख्या में ही होती हैं। इसलिए शिक्षित होने के उपरान्त भी लोग बेरोज़गार हैं। आज की आवश्यकता प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं का उद्योग स्थापित करने एवं उसे चलाने का कौशल सीखना है जो लोगों को अनिवार्य रूप से आत्मनिर्भरता की गारंटी देगा, उनमें श्रम के प्रति श्रद्धा उत्पन्न करेगा तथा समाजवाद की स्थापना का आधार स्तंभ भी होगा। इसी आवश्यकता को पूर्ण करने हेतु जयप्रकाश नारायण का इंटरमीडिएट टैक्नोलॉजी के प्रशिक्षण को प्रत्येक व्यक्ति हेतु पाठ्यचर्या में सम्मिलित करना प्रासंगिक भी है और महत्वपूर्ण भी, जो आज की भारतीय शिक्षा की कई खामियों को दूर कर सकता है और समाजवादी राष्ट्र के रूप में इस देश को विकसित करने के कार्य में सहायक भी होगा, क्योंकि लोग स्वयं श्रम करेंगे, स्वयं के उद्योग के मालिक होंगे, शोषण नहीं होगा, ज़्यादा असमानता भी नहीं होगी तथा बेरोजगारी भी नहीं होगी।

शिक्षण विधि

जयप्रकाश नारायण ने शिक्षण हेतु ऐसी विधि को अपनाने पर बल दिया जिसमें सीखने वाला अपने स्वयं के अनुभव का ज़्यादा-से-ज़्यादा प्रयोग कर सके तथा उसके स्वयं के क्रियाकलाप पर केंद्रित हो। इसलिए उन्होंने ऐसी शिक्षण विधियों के प्रयोग की बात कही जिसमें छात्र स्वयं के अनुभव के आधार पर तथ्यों को वास्तविक रूप में समझ सके। उन्होंने मुख्यतः निम्नलिखित शिक्षण विधियों का उल्लेख किया जिनका प्रयोग शिक्षण में करना चाहिए-शोध विधि, अन्तर्सूझ विधि, क्रियाकलाप विधि, कार्य अनुभव एवं चर्चा विधि इत्यादि।

जयप्रकाश नारायण ने उपर्युक्त जिन शिक्षण विधियों का उल्लेख किया यदि उनका प्रयोग किया जाए तो ज्ञानात्मक स्तर से आगे बढ़कर बोधात्मक, अनुप्रयोगात्मक, विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक तथा मूल्यांकन स्तर के उद्देश्य को सरलता एवं प्रभावशाली ढंग से पूर्ण किया जा सकता है। ये विधियाँ छात्रों को सिर्फ़ सैद्धांतिक पक्ष ही नहीं बल्कि व्यावहारिक पक्ष को तार्किक आधार पर सीखने में कारगर सिद्ध होंगी, जिनका प्रयोग वह अपनी समस्याओं के समाधान में कर सकेगा। वर्तमान शिक्षा जो ज़्यादातर सैद्धांतिक ज्ञान को ही एक से दूसरे में स्थानांतरित होने का माध्यम बनी हुई है, का प्रमुख कारण प्रभावहीन शिक्षण विधियों का प्रयोग रहा है जो छात्रों में मात्र ज्ञानात्मक स्तर के विकास में कारगर रही हैं। इन परिस्थितियों में जयप्रकाश नारायण ने जिस शोध विधि, क्रियाकलाप विधि, कार्य अनुभव एवं चर्चा विधि का उल्लेख किया वह आज के शिक्षण हेतु नितांत आवश्यक है।

शिक्षा का माध्यम

भारत जैसे देश में जहाँ कई भाषाएँ बोली जाती हैं, यहाँ तक कि यहाँ विदेशी भाषा का भी प्रभाव है जिनमें अंग्रेज़ी प्रमुख है, में यह हमेशा चर्चा का विषय रहा कि शिक्षा प्रदान करने के लिए माध्यम के रूप में कौन-सी भाषा को अपनाया जाए। जयप्रकाश नारायण ने इस संदर्भ में मातृभाषा का पक्ष लिया परंतु इसे अपनाने के पीछे बहुत महत्त्वपूर्ण तर्क भी प्रस्तुत किया। उनके अनुसार मातृभाषा ही शिक्षा का सशक्त माध्यम हो सकती है कोई अन्य विदेशी भाषा नहीं क्योंकि कोई भी सृजनात्मक लेखन सिर्फ़ मातृभाषा में ही संभव है, विदेशी भाषा में सिर्फ़ दूसरे की नकल की जा सकती है। उन्होंने रविन्द्रनाथ टैगोर जैसे व्यक्तियों का उदाहरण देते हुए तर्क भी दिया कि इनका सर्जनात्मक लेखन मातृभाषा में ही संभव हो सका, जबकि उन्हें विदेशी भाषा का भी ज्ञान था।

परंतु इस देश की विडम्बना यह है कि यहाँ आज मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिंदी, अंग्रेज़ी के समक्ष दोयम दर्जे की भाषा बनी हुई है। चीन, जापान, जर्मनी इत्यादि सभी का विकास भारत की अपेक्षा तीव्र गति से हुआ, इसका कारण कहीं न कहीं इन देशों में शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को स्वीकार्य करना रहा है जबकि भारत में ज़्यादातर प्रतिभाएँ भाषा के चक्कर में ही दम तोड़ देती हैं। यदि जयप्रकाश नारायण के इस विचार पर ध्यान देते हुए कि मातृभाषा ही सृजनात्मकता प्रकट करने का सशक्त माध्यम हो सकती है, शिक्षा व्यवस्था में सुधार किया जाए तो राष्ट्र और ज़्यादा विकास की गति पर अग्रसर हो सकता है। जयप्रकाश नारायण विदेशी भाषा के विरुद्ध नहीं थे किंतु उन्होंने शिक्षा प्रदान करने के माध्यम के रूप में उसका विरोध किया। विदेशी भाषा को दूसरे देशों से संबंध बनाने हेतु वह आवश्यक मानते थे।

शिक्षक

जयप्रकाश नारायण ने शिक्षकों की राष्ट्र निर्माण एवं सामाजिक पुनर्निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित किया। उनके अनुसार राष्ट्र-निर्माण तथा सामाजिक पुनर्निर्माण का उत्तरदायित्व शिक्षक का होता है तथा उसके इस कार्य में उसके संपूर्ण व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ता है, इसलिए शिक्षक को अपने दैनिक जीवन में नैतिकता का कड़ाई से पालन करना चाहिए, इसके साथ ही उसके अंदर अपने कर्तव्य एवं कार्य के प्रति समर्पण भाव का होना भी आवश्यक है। उनका यह मत था कि शिक्षक को शिक्षण तकनीकी योग्यता तथा कौशल में निपुण होना चाहिए तथा उसके अंदर वैज्ञानिक अभिवृत्ति विकसित होनी चाहिए।

शिक्षक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण अंग होता है, उसी के ऊपर शिक्षा प्रदान करने का उत्तरदायित्व होता है। शिक्षक के संपूर्ण व्यक्तित्व का प्रभाव शिक्षा पर पड़ता है क्योंकि शिक्षक छात्रों के आदर्श होते हैं और वह उनका अनुसरण करते हैं, इसलिए जयप्रकाश नारायण का यह विचार कि शिक्षकों को नैतिकता का कड़ाई से पालन करना चाहिए तथा अपने कर्तव्य के प्रति समर्पण भाव होना चाहिए बहुत ही प्रासंगिक है क्योंकि इससे छात्रों को इन गुणों के अनुसरण की प्रेरणा मिलेगी तथा शिक्षक एवं छात्र दोनों सामाजिक पुनर्निर्माण में सहायक भी होंगे।

जयप्रकाश नारायण ने शिक्षक हेतु वैज्ञानिक अभिवृत्ति, शिक्षण तकनीकी योग्यता तथा शिक्षण

कौशल में निपुणता का विचार प्रकट किया वह तो शिक्षक हेतु नितांत आवश्यक है क्योंकि इससे शिक्षण प्रभावशाली होता है तथा वर्तमान में अध्यापक प्रशिक्षण में इस पर और ज़्यादा ध्यान देना चाहिए।

छात्र

जयप्रकाश नारायण ने छात्र को राष्ट्र निर्माण एवं सामाजिक पुनर्निर्माण के सिपाही के रूप में रेखांकित किया। उनके अनुसार छात्र के अंदर ज्ञान पिपासा होनी आवश्यक है परंतु इसके साथ ही उसके अंदर सत्य के मार्ग पर चलने का साहस होना चाहिए एवं नैतिक मूल्य भी ऊँचे होने चाहिए। उन्होंने छात्र को मात्र व्यक्तिगत विकास हेतु शिक्षा ग्रहण करने को आवश्यक नहीं मानते हुए, सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शिक्षा ग्रहण करने पर बल दिया। उनके अनुसार छात्र का यह भी उत्तरदायित्व है कि वह स्वयं निर्णय करे कि जो शिक्षा उन्हें दी जा रही है वह सामाजिक आवश्यकताओं एवं हितों के अनुरूप है या नहीं। उन्होंने छात्रों से अपील की जो शिक्षा उनके गुणों में वृद्धि न करे, व्यक्ति एवं समाज की आवश्यकताओं और हितों के अनुसार न हो उस शिक्षा को ग्रहण न करें बल्कि ऐसी बीमार शिक्षा व्यवस्था के विरुद्ध आन्दोलन कर उसमें परिवर्तन करें जो उनके एवं समाज की आवश्यकताओं एवं हितों के अनुसार हो, उसके उपरांत ही शिक्षा ग्रहण करें।

इस प्रकार जयप्रकाश नारायण ने छात्रों से शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु क्रान्तिकारी कदम की अपेक्षा की जो कि बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह छात्रों को ही भली-भाँति ज्ञात होता है कि जो शिक्षा उन्हें दी जा रही है वह उनके एवं समाज हेतु कहाँ तक उचित है और यदि इसमें बदलाव लाना हो तो छात्रों के आन्दोलन द्वारा यह हो भी सकता है। यह एक वास्तविकता है कि छात्र ही क्रान्ति के मज़बूत सिपाही हो सकते हैं एवं उनके बिना कोई क्रान्ति सफल नहीं हो सकती। परंतु जयप्रकाश नारायण ने ऐसे सिपाही हेतु जो गुण बताया वह भी बहुत ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है-सत्य के मार्ग पर चलने का साहस तथा ऊँचे नैतिक मूल्य क्योंकि यदि उनमें यह गुण होंगे तभी उनका आन्दोलन सफल भी हो सकता है। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण का यह विचार कि छात्रों के अंदर ज्ञान पिपासा, सत्य मार्ग पर चलने का साहस, ऊँचे नैतिक मूल्य होने के साथ अनुचित, सड़ी हुई शिक्षा व्यवस्था के विरुद्ध आन्दोलन कर उसमें परिवर्तन करना उनका उत्तरदायित्व है, वर्तमान परिदृश्य में आवश्यक भी है और महत्त्वपूर्ण भी।

विद्यालय

विद्यालय वह विशिष्ट संस्था होती है जहाँ शिक्षा प्रदान की जाती है। इसलिए विद्यालय के स्वरूप एवं प्रकृति का प्रभाव वहाँ प्रदान की जाने वाली शिक्षा पर बहुत ज़्यादा पड़ता है। चूँकि जयप्रकाश नारायण ने शिक्षा को सामाजिक आवश्यकताओं एवं हितों के संदर्भ में प्रदान करने पर बल दिया इसलिए उन्होंने ऐसे विद्यालय की परिकल्पना प्रस्तुत की जो वहीं के स्थानीय समाज, शिक्षकों तथा छात्रों द्वारा संचालित हो। उन्होंने कहा कि विद्यालय को वहीं के समाज, शिक्षकों, छात्रों तथा अभिभावकों के नियंत्रण में संचालित करना चाहिए। उनका विचार था कि विद्यालय में गुणवत्तापूर्ण

शिक्षा प्रदान करने हेतु आवश्यक है कि वहाँ का वातावरण भय मुक्त हो, शिक्षकों पर किसी प्रकार का अनुचित दबाव न हो, जिससे कि वे अपना पूरा योगदान विद्यालय में दे सकें। जयप्रकाश नारायण ने विद्यालय को किसी भी अन्य संस्था से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण बताया। उनके अनुसार विद्यालय किसी भी अन्य बड़ी संस्था या असेंबली या राजनीतिक पार्टी से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है।

जयप्रकाश नारायण ने विद्यालय का जो स्वरूप प्रस्तुत किया यदि उसका प्रयोग किया जाए तो विद्यालय सामाजिक पुनर्निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वर्तमान में ऐसा नहीं है कि उनके विचार को बिलकुल अपनाया नहीं गया बल्कि प्राथमिक विद्यालय के संदर्भ में ऐसा करने का प्रयास किया जा रहा है तथा इनके संचालन में वहीं के गाँव के प्रमुख लोगों का भी सहयोग लिया जा रहा है।

अनुशासन

जयप्रकाश नारायण का यह विचार था कि यदि छात्रों को उपयोगी शिक्षा प्रदान की जाए, उन्हें ऐसी शिक्षा प्रदान की जाए जो उनकी आवश्यकता की पूर्ति करें तो उनमें अनुशासनहीनता की समस्या उत्पन्न ही नहीं होगी, बल्कि वह स्वत: अनुशासित होंगे। इस प्रकार जयप्रकाश नारायण किसी बाह्य अनुशासन को ज़्यादा प्रभावशाली न मानते हुए स्वअनुशासन को बेहतर मानते थे। उनका मत था कि स्वअनुशासन द्वारा ही अनुशासन स्थापित किया जा सकता है।

आज के लोकतांत्रिक परिप्रेक्ष्य में जिसमें कि सभी को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है, ऐसी परिस्थिति में किसी ऐसी अनुशासन व्यवस्था को जो बाहर से थोपी जाए, किसी भी प्रकार से प्रभावशाली हो ही नहीं सकती, बल्कि इन परिस्थितियों में जयप्रकाश नारायण द्वारा बताए गये स्वअनुशासन का प्रारूप ही प्रभावशाली हो सकता है। अत: जयप्रकाश नारायण का स्वअनुशासन वर्तमान समय की मांग है एवं इसलिए वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ज़्यादा प्रासंगिक है।

स्त्री शिक्षा

जयप्रकाश नारायण ने महिलाओं की शिक्षा पर भी विशेष ध्यान दिया। उन्होंने कहा कि महिलाएँ भी अपने आप में दलित वर्ग हैं, उनको भी बहुत बातों की स्वातंत्रता नहीं है। वह स्त्री शक्ति को जगाना चाहते थे, उनके लिए भी पूर्ण स्वतंत्रता चाहते थे। उन्होंने स्त्रियों को भी पुरुषों के समान शिक्षा देने पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में पुरुषों और महिलाओं में कोई फ़र्क नहीं होना चाहिए, हर तरह से महिलाओं को समानता का व्यवहार मिलना चाहिए।

इस प्रकार जयप्रकाश नारायण ने महिलाओं को समाज के पुनर्निर्माण में पुरुषों के समान ही महत्त्व देते हुए उनकी शिक्षा के बीच कोई फ़र्क नहीं किया, बल्कि समान शिक्षा का विचार रखा जो एक आधुनिक एवं सभ्य समाज के निर्माण के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष

इस प्रकार जयप्रकाश नारायण ने शिक्षा को सामाजिक आवश्यकताओं एवं हितों के संदर्भ में प्रस्तुत किया। उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षा का माध्यम, शिक्षण विधि, शिक्षक, छात्र, अनुशासन एवं स्त्री शिक्षा इत्यादि को व्यावहारिकता की कसौटी पर

सफलतापूर्वक रखा तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार हर तरह के परिवर्तन पर बल देते हुए शिक्षा व्यवस्था में सुधार पर ज़ोर दिया जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ज़्यादा प्रासंगिक प्रतीत होते हैं।

संदर्भ

ग्रोवर, विरेन्द्र (सम्पा.), 1991. *मैसेज टू द नेशन-जयप्रकाश नारायण*, नयी दिल्ली – दीप एंड दीप पब्लिकेशन्स.

बसु, दुर्गादास. 1998. *भारत का संविधान-एक परिचय*, नयी दिल्ली– प्रेंटिस हाल ऑफ इंडिया प्राइवेट लिमिटेड.

नारायण, जयप्रकाश. 1966. *एजुकेशनल आइडियल्स एंड प्राब्लम ऑफ पीस*, तन्जावुर–सर्वोदय प्रचुरालया।

_____ 1978. *महिलाएं दृढ़ता दिखाएं*, समग्रता, 6-19 अगस्त.

_____ 1997. *मेरी विचार यात्रा भाग-2*, वाराणसी – सर्व सेवा संघ प्रकाशन.

_____ 1998. *फ्रॉम सोशलिज्म टू सर्वोदय*, वाराणसी – सर्व सेवा संघ प्रकाशन.

_____ 2001. *मेरी विचार यात्रा भाग-1*, वाराणसी – सर्व सेवा संघ प्रकाशन.

_____ 2002. *इनसाइड लाहौर फोर्ट*, वाराणसी – सर्व सेवा संघ प्रकाशन.

_____ 2003. *कारावास की कहानी*, वाराणसी – सर्व सेवा संघ प्रकाशन.

_____ 2003. *टोटल रिवोल्यूशन*, वाराणसी – सर्व सेवा संघ प्रकाशन.

प्रसाद, बिमल (सम्पा.). 2003. *जयप्रकाश नारायण सलेक्टेड वर्क वो.-3*, नयी दिल्ली – मनोहर पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.

_____ 2003. *जयप्रकाश नारायण सलेक्टेड वर्क वो.-4*, नयी दिल्ली–मनोहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स.

शरण, त्रिपुरारी. जयप्रकाश नारायण के शिक्षा चिंतन के संदर्भ में पंकज कुमार दूबे द्वारा त्रिपुरारी शरण का लिया गया साक्षात्कार (अप्रकाशित साक्षात्कार), पटना, 28 जून, 2008.

शाह, कान्ति. 2002. *जयप्रकाश की जीवन-यात्रा*, वाराणसी – सर्व सेवा संघ प्रकाशन.